

हिन्दी
कक्षा आठवीं

लाख की चूड़ियाँ



टैगोर इंटरनेशनल स्कूल
वसंत विहार, नई दिल्ली



0846CH02

प्राचार्या की कलम से

प्रिय पाठकगण,

‘परिवर्तन ही एकमात्र अचल राशि है ,स्थायी है। एक बुद्धिजीवी द्वारा कही गई यह पंक्ति वास्तव में सत्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आने के साथ-साथ शिक्षा का स्वरूप भी बदला है। शिक्षा का ध्यान अब अधिकाधिक विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा पर है। शिक्षा के क्षेत्र में बदलते परिदृश्य के साथ तालमेल बैठाने ,शिक्षा को रोचक-मनोरंजक बनाने तथा विकसित करने हेतु नवीन रणनीतियों को अपनाने का समय है। शिक्षण सामग्री को इस प्रकार तैयार करने की आवश्यकता है जिसे विद्यार्थी सरलता से समझ सकें। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने कक्षा तथा राष्ट्र में शिक्षा प्रदान करने के तरीके में भी बदलाव किया है।

पाठ्यचर्या के साथ कला एकीकरण, हास्य आधारित शिक्षा, शारीरिक क्षमता पर ज़ोर, ये सभी प्रयास विद्यार्थियों को भविष्य की आवश्यकताओं के लिए तैयार करने हेतु हैं। ऐसा ही एक प्रयास है - पाठ्यचर्या को ग्राफिक उपन्यासों में बदलना। श्री संदीप सेठी ने इसमें अहम् भूमिका निभाई है। अपने निरंतर निर्देशन तथा मार्गदर्शन के माध्यम से उन्होंने शिक्षकगण को भी प्रेरित किया ,उन्हें अपना समर्थन दिया।

मैं सुश्री अनीता करवाल, सचिव स्कूली शिक्षा विभाग, मानव संसाधन व विकास मंत्रालय की भी आभारी हूँ , जिनके बहुमूल्य सहयोग और निरंतर प्रेरणा ने शिक्षकों को दिलचस्प ग्राफिक के रूप में अवधारणा को संग्रहित करने के लिए प्रोत्साहित किया है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह कक्षाओं में विषयों को पढ़ाने के तरीके को बदल देगा। एक उपकरण

के रूप में कॉमिक स्ट्रिप का उपयोग करके, अवधारणाओं को सरल तरीके से समझाया जाएगा ,जो विद्यार्थियों के लिए अधिक प्रासंगिक होगा ।

सुश्री अनीता करवाल-सचिव स्कूली शिक्षा विभाग ,मानव संसाधन व विकास मंत्रालय, श्री मनोज आहूजा-अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा परियोजना के पायलट श्री संदीप सेठी के योग्य संगठन हेतु हमारा हार्दिक धन्यवाद ।

मैं उन प्रतिभाशाली शिक्षकों तथा शिष्य मंडली को भी हार्दिक धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने समयबद्ध तरीके से रचनात्मक रूप से शानदार, मनोरंजक सामग्री का निर्माण किया जो विद्यार्थियों के लिए असाधारण व अमूल्य निधि सिद्ध होगा ।

पठन का आनंद लें ।

शैफाली गुप्ता

प्राचार्या

टैगोर इंटरनेशनल स्कूल

वसंत विहार

नई दिल्ली

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1	प्रस्तावना	5
2	दृश्य आरेखण	6
3	अधिगम प्रतिफल	6
4	पात्र परिचय	7
5	कहानी	8
6	पठन कौशल	15
7	भाषा बोध	18
8	भाषा कौशल	18
9	अस्वीकरण रचना स्वत्व- सर्वाधिकार सुरक्षित	19
10	स्वीकृति	20
11	कहानी एक नज़र में	21

प्रस्तावना

लेखक :-कामतानाथ

“लाख की चूड़ियाँ” शहरीकरण और औद्योगिक विकास से गाँव के उद्योग के खत्म होने के दुख को चित्रित करती है। यह कहानी रिश्ते-नाते के प्यार में रचे-बसे गाँव के आपसी सम्बन्धों में बिखराव और कामकाज के नुकसान के आर्थिक कारणों को स्पष्ट करती है। यह कहानी लेखक के बचपन की है। वह अपने मामा के घर जाता है और वहाँ पर बदलू के द्वारा बनाई गई सुन्दर-सुन्दर लाख की गोलियों के साथ खेलता है, प्रसन्न होता है और जब वह वापस आता है तो उसके पास ढेर सारी लाख की गोलियाँ होती हैं जिसे वह अन्य बच्चों को दिखाकर प्रसन्न होता जैसा कि रिश्ते में होता है कि माँ के गाँव में रहने वाले जो व्यक्ति हैं या तो वह नाना हैं, या मामा हैं, परन्तु लेखक बदलू को ‘बदलू मामा’ न कहकर ‘बदलू काका’ कहा करता था क्योंकि गाँव के अन्य बच्चे भी मामा को काका कहते थे। इस पाठ द्वारा लेखक लघु उद्योगों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित कर रहा है। इस पाठ में बदलू के सीधेपन और सादगी को दिखाया है। जिसे टूटना कबूल था झुकना नहीं, क्योंकि बदलू का व्यक्तित्व काँच की तरह नाजुक नहीं है।

दृश्य आरेखन

- ❖ ग्रीष्मकालीन अवकाश में जनार्दन को मामा के गाँव जाने का चाव
- ❖ बदलू के प्रति स्नेह
- ❖ चूड़ियाँ बनाने की प्रक्रिया
- ❖ वस्तु-विनिमय
- ❖ शादी-ब्याह पर मनचाही भेंट
- ❖ काँच की चूड़ियों से नफरत
- ❖ लेखक का गाँव से नाता टूटकर पुनः जुड़ना
- ❖ बदलू का परिस्थिति में बदलाव
- ❖ बदलू का व्यक्तित्व लाख के समान सुदृढ़ काँच के समान नाजुक नहीं ।

अधिगम प्रतिफल

- ❖ विद्यार्थी शहरीकरण और औद्योगिक विकास से गाँव के उद्योगों के खत्म होने के दुख को महसूस करेंगे।
- ❖ कहानी को पढ़कर बदलू के दुख का कारण जानेंगे।
- ❖ अपने आसपास रहने वाले परिवारों के कामकाज के विषय में जानेंगे।
- ❖ नवीन शब्दावली से परिचित होंगे।

पात्र परिचय



जनार्दन (8-18 वर्ष का शहरी बालक)
शहर में रहने के बावजूद गाँव से मिलने वाली रंग-बिरंगी लाख की
गोलियों के प्रति मोह। हर गर्मी की छुट्टियों में ननिहाल जाने का चाव।



जनार्दन की माँ माया (30 वर्षीय शहरी महिला)
माया शहर में रहने वाली हँसमुख महिला जो अपने पुत्र को संस्कार तथा अपनी
संस्कृति से जोड़कर रखती है।



बदलू (30-32 वर्षीय ग्रामीण, 40-42 वर्षीय ग्रामीण मनिहार)
बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था और वास्तव में वह बहुत ही
सुंदर चूड़ियाँ बनाता था। उसकी बनाई हुई चूड़ियों की खपत भी बहुत थी।

गुड़िया (6 वर्षीय ग्रामीण कन्या)
जनार्दन की ममेरी बहन

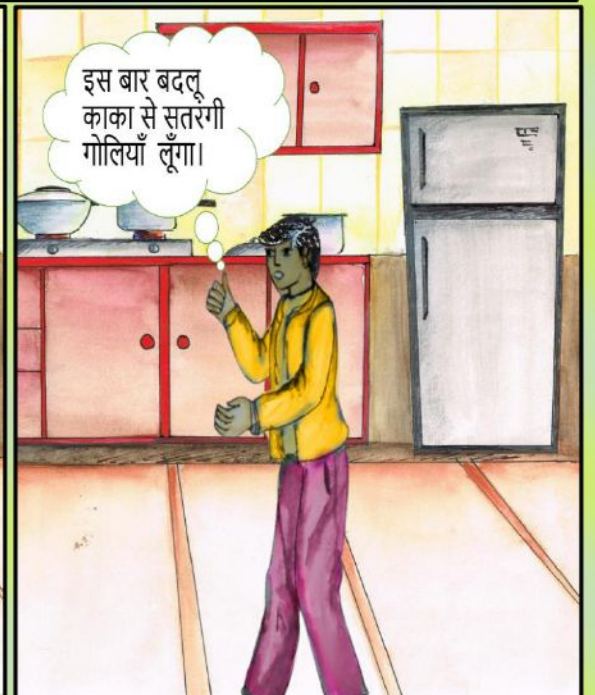


रज्जो (8-18 वर्षीय ग्रामीण कन्या)
बदलू की बेटी जो अपने पिता का साथ निभा रही है बीमार होने पर उस का साथ देकर
तथा गरीबी में रहकर अपने पिता का मान-सम्मान बनाए हुए है।



राजा (8 वर्ष का शहरी बालक)
जनार्दन का सहपाठी जो उसके साथ खेलकूद में समय बिता कर प्रसन्न होता है।





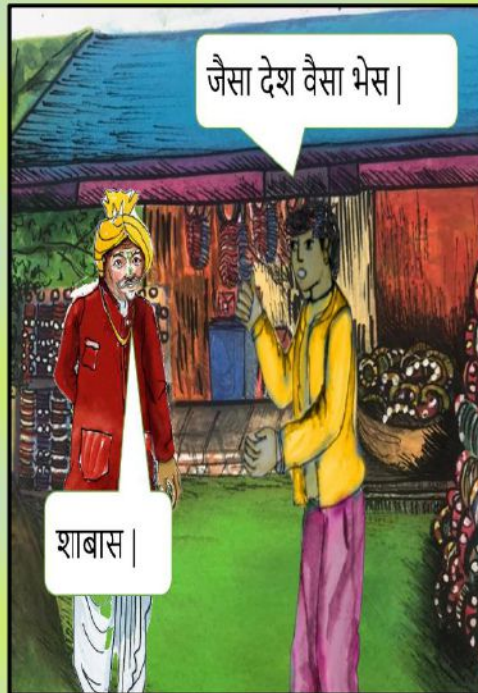






नमस्कार काका
कैसन बा?

अरे वाह! हमार बबुआ
तो एकदम हमार भासा
बोल रहा ।



जैसा देश वैसा भेस ।

शाबास ।



काका आपसे
एक बात पूछे?

एक क्यों बहुत बात
पूछो लल्ला।



आप कितने साल से
चूड़ियाँ बना रहे हो?

लल्ला हम तो बचपन से ही
बनाए रहे हमारे बाप दादा
ईही काम करते रहे ।



उन्हीं को देख-देख कर सीख गए। बगल
में भट्टी में लाख पिघलाया कर लकड़ी
की चोखट पर लाख के मुलायम होने पर
वह उसे सलाख के समान पतला करके
चूड़ी का आकार दे कर चार-छह विभिन्न
आकार की बेलननुमा मुँगेरियाँ जो आगे
से कुछ पतली और पीछे से मोटी होतीं।



लाख की चूड़ी का आकार देकर
वह उन्हें मुँगेरियों पर चढ़ाकर
गोल और चिकना बनाते और तब
एक-एक कर पूरे हाथ की चूड़ियाँ
बना चुकने के पश्चात वह उन पर
रंग करते ।



काका आप सब को
चूड़ियाँ देते हो पर पैसा
कभी नहीं लेते।

अरे बबुआ! हम
अपने हुनर को
बेचत नाही।



फिर क्या करते हो
काका?

अरे बेटा चूड़ी के बदले
कभी अनाज लेत है
कभी कपड़ा।



काका आप सबको कितना प्यार करते हो। यहाँ तक इतने दिल से बनाई गई चूड़ियों के बदले अपनी जरूरत भर का सामान लेते हो।

सच कहा लल्ला मेरा काम काम नहीं है मेरा मान है।



एक बात बताइए काका आप किस चीज को पसंद नहीं करते?

लल्ला सच कहें तो हम केवल एक ही चीज से बहुत ही नफरत करते हैं और ऊ है ई काँच की चूड़ियाँ।



पर क्यों काका?



काँच की चूड़ियाँ मशीन से बनती हैं लल्ला और मशीनों ने इन कामगारों को बेकार कर दिया। काँच बहुत खतरनाक होता है और नाजुक भी मनिहारों ने अपनी पीढ़ियों की परम्परा को खो दिया इस कारण।



काका आप का जवाब नहीं।

पर तुमरे सवाल बहुत हैं।



वस्तु-विनिमय हमारी मैम ने कक्षा में बताया था। पहले लोग एक वस्तु देकर दूसरे से दूसरी वस्तु ले लेते थे जैसे चूड़ियाँ लोगों को देकर पैसे न लेकर आवश्यकता का सामान लेना। यही वस्तु-विनिमय पद्धति है। अब तो विनिमय की प्रचलित पद्धति मुद्रा है अर्थात् धन देकर वस्तु खरीदना।

जनार्दन के पिता की बदली दूर शहर में हो गई करीब 8-10 साल बाद उसका अपने मामा के गाँव जाना हुआ।

कितना बदल गया है सब कुछ।



काँच की चूड़ियों से तो काका को नफरत थी।

काका ????

प्रणाम काका।
काका मैं जनार्दन।

कौन? कौन हो?
नहीं पहचाना बेटा।

काका आपका जवाब नहीं।

पर तुम्हारे सवाल बहुत ...

क्या हुआ काका बीमार हो?

नहीं बेटा फसली खाँसी है। बहुत सालों बाद आए।

बस काका आना ही नहीं हुआ। इस बार लाख की गोलियाँ ना दोगे?

क्यों काका?

लल्ला कई बरस हुए काम बंद कर दिया।



पठन कौशल

I. दिए गए शब्दों में से उचित शब्द छाँट कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. लेखक बदलू को _____ कहता था।
मामा, काका, नाना।
2. बदलू को _____ की चूड़ियों से नफरत थी।
लाख, प्लास्टिक, काँच।
3. जनार्दन को लाख की _____ पसंद थीं।
चूड़ियाँ, गोलियाँ, कलम।
4. जनार्दन _____ में गाँव गया था।
ग्रीष्मावकाश, शीतांशु, शरदावकाश।
5. बदलू की बेटी का नाम _____ था।
रज्जो, गुड़िया, रानी।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उचित उत्तर छाँट कर लिखिए।

1. बदलू पेशे से कौन था?
क. सुनार
ख. मनिहार
2. गाँव में लेखक का कौन था?
क. मामा
ख. चाचा

3. जनार्दन की माँ का नाम क्या था?

क. माया

ख. माला

4. लेखक के मित्र का नाम बताइए।

क. राना

ख. राजा

5. बदलू ने चूड़ियों का आखिरी जोड़ा किसके लिए बनाया था?

क. जमींदार

ख. जनार्दन

III. गद्यांश पर आधारित प्रश्न:

लेखक के मामा के गाँव में लाख की चूड़ियाँ बनाने वाला मनिहार बदलू रहा करता था। वह लाख की बहुत सुन्दर चूड़ियाँ बनाता था। परन्तु लेखक के लिए वह खास तौर पर लाख की रंग बिरंगी सुन्दर गोलियाँ बनाकर दिया करता। जिसके कारण लेखक सदैव बदलू के पास जाता और यही कारण है कि लेखक को उसके मामा का गाँव भाता था। बदलू को गाँव के सारे बच्चे ही बदलू काका कहकर बुलाया करते थे। इसलिए लेखक ने भी उनको काका कहना ही उचित समझा। बदलू उन्हें अपने के पेड़ के सिन्दूरी आम खाने को देता, मलाई खाने को देता।

1 बदलू क्या काम करता था?

2 लेखक को अपने ननिहाल आना क्यों भाता था?

3 बदलू के आँगन में किसका पेड़ था?

4 लेखक बदलू को क्या कहकर बुलाया करता था?

5 लेखक के मामा के गाँव कौन रहा करता था?

IV. कथन के साथ मिलाप कीजिए।

क- बदलू ने काम बंद कर दिया
ख- गुड़िया रोने लगी
ग- माया भी उत्सुक थीं
घ- बदलू ने रज्जो को क्या कहा

क- गाँव जाने के लिए-
ख- मलाई ले आ-
ग- उसकी काँच की चूड़ियाँ टूट गई थी-
घ- अब उसके हाथ से बनी चूड़ियाँ कोई नहीं खरीदता था

V. कीजिए और जानिए:

विषय एकीकरण

हिन्दी – सामाजिक विज्ञान

वस्तु विनिमय प्रणाली

जब किसी एक वस्तु या सेवा के बदले दूसरी वस्तु या सेवा का लेन-देन होता है तो इसे वस्तु विनिमय कहते हैं। जैसे एक बकरी लेकर १० मुर्गियाँ देना। इस पद्धति में विनिमय की सार्वजनिक इकाई अर्थात् मुद्रा (रुपए -पैसे) का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। हमारे देश में कब से मुद्रा का चलन हुआ जानकारी एकत्र कीजिए।

भाषा बोध

I- लिंग बदलिए

- 1 काका
- 2 मामा
- 3 माता
- 4 लेखक
- 5 मनिहार

मनिहार
लेखिका
काका
माता
लेखिका
रमल

II- निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए

- 1 गाय
- 2 मित्र
- 3 बहन
- 4 पेड़
- 5 माँ

बहन, मित्र
गाय, बहन
पेड़, मित्र
माँ, गाय
गाय, मित्र
रमल

भाषा कौशल

बदलू काका की रंग-बिरंगी लाख की चूड़ियों के लिए एक आकर्षक विज्ञापन की रचना कीजिए।

अस्वीकरण

टैगोर इंटरनेशनल स्कूल वसंत विहार, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तुत चित्र कथा लेखक कामतानाथ वसंत भाग तीन कक्षा आठवीं को आधार बना कर तैयार की गई है। यह पूर्णतः काल्पनिक है, पूरक मात्र है। इसका एकमात्र उद्देश्य बच्चों में पठन-पाठन के प्रति रुचि पैदा करना है। इस चित्र कथा के माध्यम से बच्चे शहरीकरण और औद्योगिक विकास से गाँव के उद्योग के खत्म होने के दुख को महसूस कर पाएँगे।

रचना स्वत्व – सर्वाधिकार सुरक्षित

विद्यालय की पूर्व अनुमति के बिना इस उपन्यास के किसी भी भाग की प्रतिलिपि अथवा पुनरुत्पादन किसी भी प्रणाली में, किसी भी रूप में, किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक) संग्रहित या प्रसारित नहीं किया जा सकता।

स्वीकृति

इस चित्रात्मक आलेख के निर्माण एक सामूहिक प्रयास है। इसके लिए हम प्रधानाचार्या जी श्रीमती शैफाली गुप्ता जी का विशेष रूप से धन्यवाद करते हैं। हम बहुत आभारी हैं श्री संदीप सेठी जी (शिक्षा निदेशक M,S,M,S,II) संग्रहालय ट्रस्ट जिनके अथक प्रयास एवं प्रोत्साहन से ही यह कार्य संभव हो पाया।

प्रशिक्षण मंत्रणा	श्री संदीप सेठी (शिक्षा निदेशक M,S,M,S,II) संग्रहालय
मंत्रणा निकाय	श्रीमती शैफाली गुप्ता - प्राचार्या (टैगोर इंटरनेशनल स्कूल वसंत विहार) श्रीमती मलिका प्रेमन-प्राचार्या (टैगोर इंटरनेशनल स्कूल ईस्ट आफ कैलाश) श्रीमती एन सरोज शैक्षणिक अधिष्ठात्री (टैगोर इंटरनेशनल स्कूल वसंत विहार) श्रीमती शिवानी गुप्ता-वरिष्ठाध्यक्ष (टैगोर इंटरनेशनल स्कूल वसंत विहार)
संकल्पना,पटकथा,संवाद	श्रीमती उमा चोपड़ा टी जी टी (टैगोर इंटरनेशनल स्कूल वसंत विहार)
संगणक विभाग	श्रीमती गुनीत कौर
कला-विभाग	सुश्री मीना नागपाल

कहानी एक नज़र में

कामतानाथ की कहानी "लाख की चूड़ियाँ" शहरीकरण और औद्योगिक विकास से गाँव के उद्योग के ख़त्म होने के दुख को दिखाती है। यह कहानी रिश्ते-नाते के प्यार में बसे गाँव के सहज संबंधों में बिखराव और सांस्कृतिक नुकसान के आर्थिक कारणों को स्पष्ट करती है।

यह कहानी एक बच्चे और बदलू मनिहार की है। जो उसे लाख की गोलियाँ बनाकर देता है और वह बच्चा इस बात से बहुत खुश होता है। धीरे-धीरे समय बीतता है और वह बच्चा बड़ा होने के बाद एक बार फिर गाँव आता है और बदलू से मिलकर औपचारिक बात करते हुए उसे मालूम होता है कि गाँव में "लाख की चूड़ियाँ" बनाने का काम लगभग ख़त्म हो रहा है।

बदलू इस बदलाव से दुखी है किन्तु वो अपने उसूल नहीं त्यागता तथा साथ ही अपना जीवन चलाने के लिए कई और रास्ते निकाल लेता है। इस कहानी में लेखक विपरीत परिस्थितियों में भी अपने उसूलों को न त्यागने की सीख देता है तथा उन्हें इस बात पर संतोष भी है।



द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
टैगोर इंटरनेशनल स्कूल
सी ब्लॉक, पश्चिमी मार्ग,
वसंत विहार, नई दिल्ली-1100057
ईमेल—info.vv@tagoreint.com
वेबसाइट—www.tagoreint.com